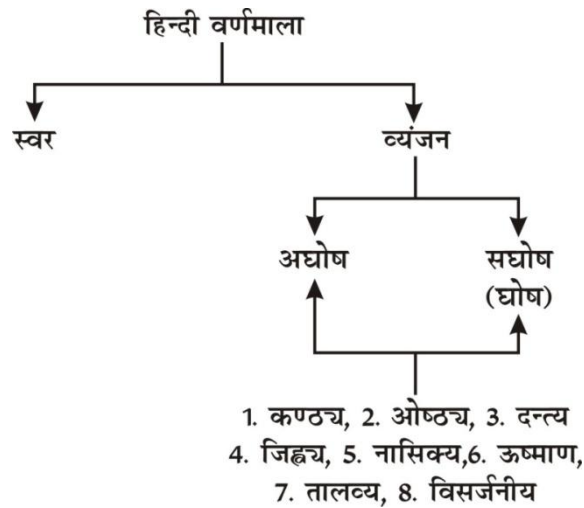


# कथक नृत्य की रचनाओं का तकनीकी स्वरूप

यास्मोन सिंह

कथक नृत्यांगना – रायगढ़ घराना  
पी-एच.डी. स्कॉलर

प्राचीन आचार्यगणों ने नृत्य में वर्णाक्षरों के महत्त्व को भली-भाँति समझते हुए इस पक्ष का विस्तृत विवरण अपने-अपने ग्रंथों में उद्धृत किया है। आचार्य भरत ने नाट्य” शास्त्र के 15वें अध्याय में वर्णमाला के अक्षरों को वर्गीकृत कर स्वर और व्यंजन बताये हैं, जिसमें ‘अ’ से प्रारंभ होने चौदह वर्णसमूहों को ‘स्वर’ एवं ‘क’ से ‘ह’ तक के वर्णों को ‘व्यंजन’ कहा है। व्यंजन को पुनः ‘अघोष’ और ‘सघोष’ दो वर्गों में विभाजित किया है। भरतमतानुसार व्यंजन के प्रत्येक वर्ग में आने वाले प्रथम दो वर्ण अघोष और भोश वर्ण सघोष (या घोष) कहलाते हैं। आचार्य ने अघोष और सघोष के भी आठ भेद बताये हैं, जो निम्नांकित चित्र से स्पष्ट है—



नाट्य” शास्त्र में ‘क’ वर्ग को कण्ठ्य, ‘च’ को तालव्य, ‘ट’ को मूर्धन्य, ‘त’ को दन्त्य और ‘प’ वर्ग को ओष्ठ्य वर्गों में विभाजित किया है। उक्त वर्णित वर्णों के विभाजन को कथक नृत्य में प्रयुक्त होने वाले बोल-वर्णों की रचना तकनीक के अनुसार देखा जाए, तो बहुधा ‘दन्त्य’ वर्ग अर्थात् ‘त, थ, द, ध, न’ अधिकांशतः प्रयोग किया जाता है, जैसे—

|   |                |
|---|----------------|
| त | ता, तत, तिग्धा |
| थ | थेई            |
| द | दिगदिग         |
| ध | धा             |

कथक नृत्य की प्रारंभिक रचना या बोल के रूप में ‘ता थेई तत्’ को लिया जाता है जो मूलतः दन्त्य वर्णों और स्वर के सम्मिश्रण से निर्मित किये गये हैं।

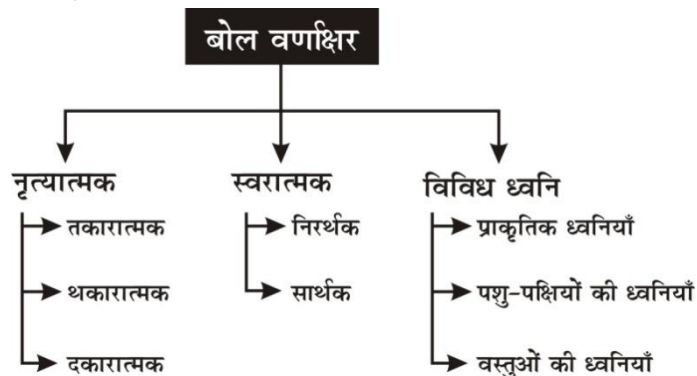
‘त’ के साथ ‘आकार’ (त+आ) के प्रयोग से ‘ता’ की व्युत्पत्ति की गई। कथक नृत्य अथवा नृत्य सिद्धान्त में ‘ता’ को वि” श स्थान प्राप्त है। विद्वानों ने ‘ता’ को ताण्डव नृत्य का प्रतिनिधि भाब्दाक्षर, ‘ताल’ और ‘तारवाद्य’ जैसे भाब्दों की कल्पना भी की है।

‘ता’ के प” चात् बोल-वर्णों में ‘थेई’ को स्थान प्राप्त है और हिन्दी वर्णमाला के अनुसार भी ‘त’ के बाद ‘थ’ का ही स्थान है। ‘थेई’ की संरचना में ‘थ + ए + ई’ का मिश्रण है, जिसे भरत द्वारा बताये गये वर्ण-सिद्धान्त के अनुरूप निम्नानुसार समझा जा सकता है—

| थेई       | थ    | ए      | ई     |
|-----------|------|--------|-------|
| भरतानुसार | अघोश | ह्रस्व | दीर्घ |

उक्त वर्णित भाब्दों के अतिरिक्त अन्य ऐसे बहुत से भाब्द प्रायः लिये जाते हैं, जो बोल रचना तकनीक को एक नया स्वरूप प्रदान करने में सक्षम हैं।

रचनाओं में भाब्दों के साथ-साथ एवं उनके समानान्तर ध्वनि का प्रयोग होता है। अर्थात् वर्णों या उन वर्णों से निर्मित कूटाक्षरों के उच्चारण से निकलने वाली ध्वनि के आधार पर रचनाओं की निर्मिति को तकनीकी रूप से किया जाना अनिवार्य है। ध्वनि से उत्पन्न बोलों में नृत्यात्मक, स्वरात्मक, भाब्दात्मक, तालात्मक के साथ-साथ ऐसे बोल वर्णों का समावे” । बीच-बीच में किया जाता है, जिनसे रचना में चमत्कार, वि” श आकर्षण या किसी वि” श ध्वनि का समावे” । हो। साधारणतः बोल-रचनाओं में चमत्कार एवं आकर्षण रेफ (,) या चन्द्रबिन्दु ( ° ) के साथ ‘न’, ‘ण’ जैसे वर्णों से वि” श रूप से उत्पन्न होता है। भास्त्रकारों ने कथक नृत्य में प्रयुक्त होने वाले कूटाक्षरों या बोल-वर्णाक्षरों को विभाजित किया है, जिसे निम्नांकित आरेख के माध्यम से समझा जा सकता है—



कथकाचार्यों ने बोल-वर्णों को ध्वनि के आधार पर तीन मुख्यतः भागों में विभाजित किया है— नृत्यात्मक, स्वरात्मक और विविध ध्वनि। ये तीनों प्रकार के बोल-वर्ण परम्परागत रूप से तबला और पखावज में बजाये जाते हैं।

निश्कर्षतः कथक नृत्य में प्रयुक्त होने वाले बोल-वर्णों का नृत्य की दृष्टि से तो महत्व है ही, किन्तु इसके साथ-साथ इन बोल वर्णों में भाषायी तत्वों का समावे" 1, ध्वनि का उतार-चढ़ाव, ताल-लय के अनुसार गति की भूमिका विी" 1 श्ट रूप से इस नृत्य के तकनीकी पक्ष को पुष्ट करती है। इसके साथ-साथ कलाकार द्वारा उक्त बोल-वर्णों के अनुरूप ताल और लय पर अंगों के माध्यम से नृत्य प्रस्तुत किया जाता है, जिससे बोल-वर्णों में निहित सौन्दर्य द" कों के सन्मुख प्रकट होता है, जिसे कथकाचार्यों ने नृत्तांग का सौन्दर्य कहा है।



### संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भास्त्री, बाबूलाल भुक्ल, भरतमुनि विरचित नाट्य" 1ास्त्रम्, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, भाग-2, प्रथम संस्करण संवत् 2040
2. भास्त्री, बाबूलाल भुक्ल, भरतमुनि विरचित नाट्य" 1ास्त्रम्, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, भाग-1, द्वितीय संस्करण संवत् 2040
3. भार्मा, डॉ.जयचन्द्र, घुँघरू के बोल, श्री संगीत भारती भोध विभाग, बीकानेर, प्रथम संस्करण 1970
4. संगीत, नृत्यकला अंक, जनवरी 2016, संगीत कार्यालय, हाथरस